क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569 243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेलः kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वॉ वर्ष है
दिनॉक :

क्रियायोग साधना में महाभारत का वास्तविक स्वरूप

23 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने महाभारत के वास्तविक स्वरूप पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला । उन्होंने स्पष्ट किया कि लोग महाभारत को ऐसा ग्रंथ समझते हैं जिसमें लडाई के साथ साथ ऐसा उपदेश दिया गया है कि बुरे लोगों को मारना सबके लिए अच्छा है । वास्तव में महाभारत आत्मज्ञान प्राप्त करने का आध्यात्मिक सद्ग्रंथ है जिसमें साधक की साधनाविधि का विस्तार से वर्णन है । साधना काल में प्रकट होने वाली विभिन्न बाधाओं पर किस प्रकार विजय प्राप्त किया जाय, को विस्तार से वर्णित किया गया है । योगेश्वर श्रीकृष्ण संजय, पाण्डव व कौरव के रूप में जो भिन्न-भिन्न पात्रों के अलौकिक क्रियाकलाप दिखाये गये हैं, वे सभी साधक के अंदर के चित्त की भिन्न-भिन्न वृत्तियाँ हैं । महाभारत की तात्विक विवेचना करते हुए स्वामी जी ने कहा कि ''महाभारत'' शब्द 'महा', 'भा' और 'रत' के संयोग से बना है । 'महा' का अभिप्राय सबसे बड़ा (वृहदतम्), 'भा' का अभिप्राय ज्ञान (सर्वज्ञ तत्व) तथा 'रत' का अभिप्राय सम्यक् युक्तावस्था से है। सबसे बड़े ज्ञान से संयुक्त होना ही महाभारत है। सबसे बड़ा ज्ञान अमरता का ज्ञान है, अहिंसा का ज्ञान है, सच को जानना है । अतः महाभारत अमरता की अनुभूति की अवस्था है। अमरता की अनुभूति प्राप्त करने के सबल प्रयत्न को युद्ध कहते हैं ।

''युद्ध'' को स्पष्ट करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम महाराज जी ने आगे कहा कि ''युद्ध'' शब्द 'य', 'उ', 'ध्', 'अ' और 'द' के संयोग से बना है । 'य' का अभिप्राय यापन (असीमता तक विस्तार), 'उ' का ऊपर से, 'ध्' का अभिप्राय धारण करने से, 'अ' का अभिप्राय ब्रह्मा, विष्णु, शिव में व्याप्त शक्ति और ज्ञान से तथा

'द्' का अभिप्राय दाता (परब्रह्म) से है। युद्ध शब्द अनुभव करने पर स्पष्ट होता है कि साधक जब अपनी एकाग्र शक्ति को उर्ध्वगामी करता है तो वह अपने स्वरूप का अस्तित्व ब्रह्मा, विष्णु, शिव और परब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं पाता है । वह स्पष्ट तरीके से समझ लेता है कि जिस प्रकार समुद्र लहरों के रूप में प्रकट होता है उसी तरह परब्रह्म ब्रह्मा, विष्णु, शिव के रूप में और ब्रह्मा, विष्णु, शिव ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाओं के रूप में प्रकट हो रहे हैं।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने आगे कहा कि महाभारत में वर्णित समस्त पात्र और उनसे युद्ध की घटना साधना की विभिन्न स्थितियाँ हैं। आत्मज्ञान की प्राप्ति में प्रकट होने वाली बाधाएँ तथा उन विजय प्राप्त करने के लिए साधक के द्वारा किया गया आध्यात्मिक संघर्ष महाभारत में विभिन्न पात्रों से युद्ध के रूप में वर्णित है । स्वामी जी ने कहा कि महाभारत के समस्त पात्र आज भी मानव स्वरूप में विभिन्न शक्तियों के रूप में विद्यमान हैं । ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी अतीत में घटित हुआ था और जो भविष्य में घटित होगा तथा वर्तमान की सम्पूर्ण घटनाएँ स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण में घटित हो रही हैं । इसी सत्य को स्पष्ट करते हुए ऋषियों ने कहा है यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे । ब्रह्माण्ड के प्रत्येक पिण्ड में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित है । किसी भी रचना में ध्यान बढाकार अतीत, वर्तमान और भविष्य को जाना जा सकता है । बाह्य किसी रचना में ध्यान बढ़ाकार सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति करने में लाखों जन्म लग जाते हैं । पूर्ण ज्ञान को एक जीवनकाल के अल्प समय में प्राप्त करने के लिए स्वरूप में मन को केन्द्रित करना पड़ता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने अपने अंदर महाभारत के विभिन्न पात्रों के स्वरूपों को स्पष्ट करते हुए कहा कि महाभारत काल के भीष्म अपने अंदर अहंकार, द्रोणाचार्य आदत, कर्ण राग द्वेष, दुर्योधन कामना, दुष्शासन क्रोध, शकुनी मोह, कृपाचार्य अविद्या, अश्वत्थामा कर्मफल के प्रतीक हैं । क्रियायोग की साधना से साधक के अंदर की सम्पूर्ण सीमित प्रवृत्तियाँ जिन्हें कौरव शक्ति कहा गया है, का असीम दैव शक्ति में रूपान्तरण हो जाता है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, मत्सर (आदत, अहंकार, अज्ञान) आदि जो अन्तःकरण की कौरव शक्तियाँ हैं का पाण्डव शक्ति - दम, शम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान में रूपान्तरण हो जाता है । सीमित शक्तियों का असीम अनन्त शक्ति में रूपान्तरण को युद्ध कहते हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है । कार्यक्रम में भारत, कनॉडा, अमरीका, पोलैण्ड, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, फिनीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक, प्रबुद्ध वर्ग तथा तीर्थयात्री और कल्पवासी भारी संख्या में भाग ले रहे हैं ।

– योगमाता